

श्रीसीतारामाभ्यां नमः

चित्रकूटकी झाँकी

चित्रकूट

अहाँ बन पावनो मुहावनो विद्वद्भूषण,

देखि अति लागत अनन्द रित खूट सो ।

सीता-राम-लखन निवास बास मुनिनको,

सिद्ध साधु साधक सय बिबेक बूट सो ॥

भरना भरत शारि सीतल पुनीत बारि,

मन्दाकिनि मंजुल महेश-जटाजूट सो ।

तुलसीजो रामसो सनेह सौखो चाहिये तो,

संहय सनेहसौ विचित्र चित्रकूट सो ॥

(कविनावली उत्तरकाण्ड १३५)

श्रीरामचरित्रसे सम्बन्ध रखनेवाले तीर्थोंमें चित्रकूटका स्थान बहुत ऊँचा है। चित्रकूट-माहात्म्यमें लिखा है कि 'यह प्रह्मपुरी है; इसमें तीस धनुषके प्रमाण एक यज्ञवेदी है, जहाँ यज्ञ करनेसे अग्निवेशादि मुनि परम सिद्धिको प्राप्त हुए थे और इसमें सारे तीर्थ निवास करते हैं।'

आजकल चित्रकूट न केवल उस पहाड़ीको कहते हैं जिसका प्रान्तिक नाम कामता है, वरं उसके आस-पास कुछ दूर तक चित्रकूट कहलाता है। सच तो यह है कि पहले चित्रकूट

पर्यंतहीका नाम रहा होगा, परन्तु आजकल यहाँ कोई विशेष
 वस्तु नहीं है जिसे चित्रकूट कहते हों । रामायणमें लिखा है कि
 श्रीराम, लक्ष्मण महर्षि वाल्मीकिसे चित्रकूटमें मिले * । आज-
 कल वाल्मीकिका आश्रम कामतासे १५ मील पूर्व बघरौही-गाँवमें
 लालापुर पहाड़ीपर बनाया जाता है । इससे हम यह अनुमान
 करते हैं कि जब श्रीरघुनाथजी यहाँ आये थे तब लालापुर
 पहाड़ीकी श्रेणी चित्रकूटतक फैली हुई थी या वाल्मीकिने एक
 आश्रम मन्दाकिनीके तटपर भी बनाया हो जहाँ श्रीरघुनाथजीने
 भी अपनी पर्णकुटीके लिये योग्य स्थान चुन लिया ।

चित्रकूट दो शब्दोंसे बना है, चित्र और कूट = शिखर,
 चोटी । चित्र संस्कृतमें अशोकको भी कहते हैं, इससे मध्यप्रदेशके
 सुप्रसिद्ध विद्वान् हमारे मित्र रायबहादुर बाबू हीरालालजीका
 यह मत है कि यहाँ अशोकवन है इसीसे इस पहाड़ीका
 नाम चित्रकूट पड़ा । परन्तु वाल्मीकीय रामायणमें
 लिखा है—

पश्येममचलं भद्रे नानाद्रिजगणायुतम् ।

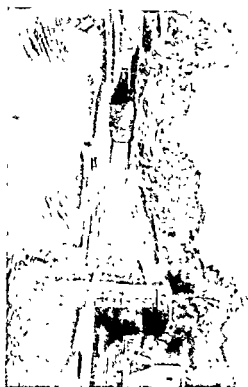
शिखरैः स्वमिवोद्विद्धैर्धातुमद्भिर्विभूषितम् ॥

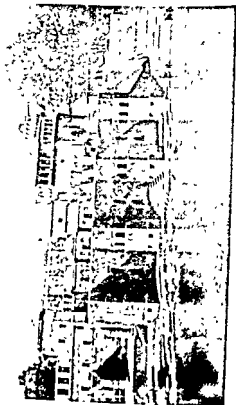
* ततस्तौ पादचारेण गच्छन्तौ सह सीतया ।

रम्यमासेदतुः शैलं चित्रकूटं मनोरमम् ॥

इति सीता च रामश्च लक्ष्मणश्च कृताञ्जलिः ।

अभिगम्याश्रमं सर्वे वाल्मीकिमभ्यवादनम् ॥





केचिज्जलमहाभाः केचिज्जलमहाभाः ।
 पानमात्रिहारीभ केचिज्जलमहाभाः ॥
 पुनरावेनकाभाः केचिज्जलमहाभाः ।
 विराजन्तेऽखलेन्द्रम देवा धनुर्विपना ॥

(२ । १४ । ४-६)

धारायुनायजी धारायुनायजीमे कहने हैं—

'हे भट्टे! माना प्रकारके पक्षियोंमें सेधित, अनेक धातुओंसे भूषित, ऊंचे शिखरोंके इस पर्यंतको देखो । कोई चौदीकी तरह मरोड़ है, कोई लोहके समान लाल है, कोई पाला, कोई मज्जा-के रङ्गका है, कोई इन्द्रनील-मणिको भोजि चमकता है, कोई पुष्परसको तरह, कोई स्फटिक-मणिको तरह है, कोई केतकीके रङ्गके है, कोई तांगे और कोई पानके भोजि चमकते हैं ।'

इसमें सिद्ध है कि अनेक रङ्गके धातुओंके कारण इस पहाड़ीका नाम चित्रकूट पड़ा ।

आजकल चित्रकूट कुछ संयुक्त-ग्राम्तके यौदा जिलेकी करीबी तहसीलमें और कुछ सींचे जागीर गज्जण्टीमें है । पहाड़ीके अतिरिक्त इसके अन्तर्गत कई गाँव हैं जिनमें सीतापुर प्रधान है । इसकी पूर्वी और दक्षिणी सीमा एक पर्यंतध्रेणी है जो बीच-बीचमें टूट गयी है । इस पहाड़ीपर यौके-सिद्ध, देवाङ्गना, हनुमान-धारा, सीताको रमोई और अनमूया आदि तोर्य हैं । दक्षिण-पश्चिममें गुप्तगोदावरी नामकी एक पहाड़ी नदी बड़ी गहरी गुफाओंसे निकलती है । यहाँसे पश्चिमकी सीमा उत्तर

भरतकृपतक चली गयी है। उत्तरकी सीमा एक कल्पित रेखा है जो भरतकृपको बाँके-सिद्धसे मिलती है और राघव-प्रयागके पास सीतापूरको छूती है। इसी सीमापर भक्त यात्री पञ्चकोशी परिक्रमा पाँच दिनमें पूरी करते हैं।

परिक्रमा

परिक्रमा दैवदर्शन और तीर्थ-यात्राका प्रधान अंश है।

परिक्रमाकी महिमा इस संस्कृत-श्लोकमें कही गयी है—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।

तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥

भावार्थ—‘इस जन्म और पूर्व जन्मके जितने पाप हैं सब प्रदक्षिणाके एक-एक पदसे नष्ट होते हैं।’

यह तो हुई परिक्रमाकी उपयोगिता, परन्तु इससे तीर्थोंकी सीमा भी निश्चित होती है। रामायणमें लिखा है कि भरतजीने भी चित्रकूट-यात्रा की थी *। उसी यात्राके क्रमसे अब भी परिक्रमा की जाती है।

पहले दिनकी परिक्रमा—राघव-प्रयागसे स्नान करके कामताकी प्रदक्षिणा करे और पुरीकी परिक्रमा करता हुआ सीतापूर लौटे—६ मील।

* देगे भल तीरथ सकल, भरत पाँच दिन माँझ।

कहत सुनत हरिहर सुजय, गयेउ दिवस भइ साँझ ॥





दूसरे दिनकी परिक्रमा—राघव-प्रयागमें स्नान करके कोटिर्तार्थ जाय, यहाँसे देवाङ्गना, सीता-रमोई, हनूमान्-धाराकी यात्रा करके नयागाँव होने लुण्ड फिर सीतापूर लींटे—१२ मील।

तीसरे दिनकी परिक्रमा—राघव-प्रयागमें स्नान करके केशवगढ़, प्रमोदधन, जानकीकुण्ड, मिरसाधन, फटिकशिखा, अनम्याजी होकर यावूपुरमें रहे—१० मील।

चौथे दिनकी परिक्रमा—यावूपुरसे गुनगोदाचरो जाकर स्नान करें, यहाँमें कैलाशपर्यंत देखकर चंद्रिपुरमें रहे—१० मील।

पाँचवें दिनकी परिक्रमा—चंद्रिपुरसे भरतकूप जाय और यहाँ स्नान करके रामशय्या होते लुण्ड सीतापूर लींटे—१२ मील।

सीतापूर (पुरी)

यह छोटा-सा सुहायना नगर पयोप्णीके तटपर है और उर्मा म्यानके आस-पास बसा है जहाँ श्रीरघुनाथजी पर्णकुटी बनाकर रहे थे। इसे पुरी भी कहते हैं। पहले इसका नाम जैमिहपुर था और इसमें कोलोंकी बस्ती थी। पन्नाके राजा अमानसिंहने इसे महन्त चरणदासजीको दे दिया और महन्तने इसका नाम बदलकर सीतापूर रख दिया। उनका अखाड़ा पुरी-भरमें सबसे उत्तम है और यह नगर उनके शिष्योंके पास है। नदीके घाट कहीं-कहीं सी फुटतक ऊँचे हैं और किनारेके मन्दिर बहुत पुराने न होनेपर भी हिन्दू-शिल्पके बहुत अच्छे नमूने हैं।

चित्रकूटकी माँकी

निंदोंपरसे दृश्य अत्यन्त रमणीय है। यहाँसे कामता डोल है।

सीतापूरमें विशेषकर पण्डे रहते हैं।

राघव-प्रयाग

यह स्थान सीतापूरका बड़ा तीर्थ है। यहाँ पयोष्णीमें पन्थाके आकारका नाला मिलता है जिसको वहाँके लोग मन्दाकिनी कहते हैं, यद्यपि अनसूयाजीसे इस स्थानतक सारा पयोष्णी भी कभी-कभी मन्दाकिनी कही जाता है। नाम धरसात बीते सूख जाता है और तब एक पयोष्णी ही रह जाती है। फिर भी इस स्थानका नाम प्रयाग होनेसे जैसे प्रयागराज (इलाहाबाद) में एक तीसरी नदी सरस्वती नीचे-नीचे अदृश्य रूपसे गंगा-यमुनासे मिलती है वैसे ही यहाँ भी गुप्तनदी गायत्री (माचित्री) मान ली गयी है। कहा जाता है कि श्रीरघुनाथजीने, जब सुना कि पिताका स्वर्गवास हो गया, तब यहाँ तिलाञ्जलि दी थी।

राघव-प्रयागको बड़ाई-बम्बानमें यह कथा प्रसिद्ध है—

‘जब रघुनाथजीने प्रयागको तीर्थोंका राजा बनाया तब बड़ा अभिमान हो गया और उसने नारदसे कहा कि हम तीर्थोंका राजा हैं। नारदजी सुनकर मुसकराये। उनके मुसकरानेका कारण पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि भगवान्ने सारे तीर्थोंका राजा बनाया हो परन्तु



तुम चित्रकूट के राजा नहीं बन सकते। तुमको न शिवनाम हो तो चित्रकूट में जाकर धीरघुनाथजी में पूछ लो।' इस बात पर प्रयागराज इसी स्थान पर धीरघुनाथजी में मिले और उनसे मारटकी बात कही। धीरघुनाथजी ने उत्तर दिया कि 'हमने तुमको मारे तार्थीका राजा बनाया है, अपने घरका राजा नहीं बनाया।' तबसे इस स्थानका नाम राघव-प्रयाग पड़ा।

कहा भी है—

चित्रकूट निज धाम, जहाँ बिराजै ललितमनराम ॥

इसी घाटके ऊपर मजगन्धेन्द्रेश्वर (मजगन्देश्वर) का बड़ा मन्दिर है। इसे पन्नाके राजा अमानसिंहने बनवाया था।

मजगन्धकी कथा यहाँ रोचक है। इससे जैसा हमने सुनी है वैसे ही पाटकोंकी भेट की जाती है।

जब धीरघुनाथजी यहाँ आये उस समय मजगन्ध यहाँका राजा था। मर्यादा-पुरुषोत्तम दूसरेके राज्यमें बिना उसकी आज्ञाके कभी रुक सकते थे। इसलिये छोटे भाईको आज्ञा लेनेके लिये मजगन्धके पास भेजा। मजगन्धको उनके दर्शन करने ही अनुभव हो गया कि मेरे घरमें मर्यादा-पुरुषोत्तमने पदार्पण किया है और लक्ष्मणजीकी बात सुनते ही वह नङ्गा नाचने लगा। लक्ष्मणजीको क्रोध आया परन्तु स्वामीकी आज्ञा बिना घे कर ही क्या सकते थे? धीरघुनाथजीके पास लौट आये। धीरघुनाथजीने पूछा, 'कहाँ, आज्ञा मिली?' लक्ष्मणजीने उत्तर दिया कि 'जिसके

राम आपने मुझे भेजा था वह पागल है।" श्रीरघुनाथजी बोले, कहो तो उमने क्या कहा? बहुत लोग बातोंसे उत्तर नहीं देते इङ्गितसे अपने मनका भाव प्रकट कर देते हैं।" तब लक्ष्मणजी ने सारा व्योरा कह सुनाया और कहा कि 'आपका डर न होता तो मैं उसे बिना मारे न छोड़ता।' इसपर श्रीरघुनाथजी बोले कि, 'आज्ञा तो मिल गयी। उसका अभिप्राय यह था कि मैं मनुष्य अपनी इन्द्रियोंको बसमें रखता हूँ उसकी कहीं अर्गा नहीं है। तुमसे बढ़कर जितेन्द्रिय कौन है? अब सुखसे हमलोग यहाँ रहें।'

मन्दाकिनी-घाट

राघव-प्रयागके सामनेका घाट मन्दाकिनी-घाट कहल है और नयागाँव जागीरमें है। पकाघाट जागीरदारके पुरुषोंने बनवाया था।

राम-घाट

बीचका घाट राम-घाट कहलाता है और इसके ऊँ मन्दिर यशवेदीके नामसे प्रसिद्ध है जहाँ ब्रह्माने यज्ञ किया इसी मन्दिरके जगमोहनमें उत्तरकी ओर पर्णकुटीका है 161 श्रीरघुनाथजीने कुछ दिन निवास किया था।

161 कथा गोस्वामी तुलसीदासजीने यों लिखी है-



रघुवर बहेठ लखन भल घाट । करिय कतहु अथ टाहर टाट ॥
 लपन दोस पय उतर करारा । चहुँदिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा ॥
 नदी पनच सर सम दम दाना । सकल कलुष कलि साउज नाना ॥
 चित्रकूट जनु अचल अहेरी । चुकै न घात मार मुठभेरी ॥
 अस कहि लपन ठायें दिखरावा । थल विलोकि रघुवर मुसु पावा ॥
 रमेउ राम मन दंघन्ह जाना । चले सहित सुरपति परधाना ॥
 कोल किरात घेप सन आये । रचे परन नून सदन सोहाये ॥
 बरनिन जाहि मन्नु दुइ माला । एक ललित लघु एक बिसाला ॥

लपन-जानकी-सहित प्रभु, राजत रुचिर निकेत ।

सोह मदन मुनिवेष जनु, रति अनुराज-समेत ॥

पर्णकुटीको साधारण लोग परमकुटी भों कहतें हैं ।

तुलसीदासजीकी कुटी

गोस्वामी तुलसीदासजीके चित्रकूटवामके दो स्थान हैं,
 एक रामघाटके सामने गलामे, दूसरा कामताको परिक्रमामें
 चरणपादुकाके पास । रामघाटहोंके निवासमें गोस्वामीजीको
 दर्शन

निसका प्रचलित दोहेमें वर्णन किया जाता है ।

गाटपर भइ मन्तनकी भीर ।

दन धर्म तिलक देत रघुबीर ॥

रघुवर बहेट लगन भल घाट । करिय बनहुँ भय टाहर छाट ॥
 लपन होय पय टनर करारा। चहुँदिमि पिरेउ धनुष जिमि नारा ॥
 नदी पनघ भर सम डम जाना । सकल बनुष कलि माठज नाना ॥
 चित्रकूट जनु भचल अहेरी । चुके न घान मार मुठभेरी ॥
 भस बहिलपन टावै दिग्यराया । थल विगोकि रघुवर मुगु पाया ॥
 रमेठ राम मन देवन्ह जाना । चले सहित मूरपनि परधाना ॥
 कोल किराम घेर मग भाये । रचे परन नून सदन सोहाये ॥
 धरनि न जाहि मग्नु दुइ साला । एह लालत लघु मूक बिसाला ॥

लपन-जानकी-सहित प्रभु, राजन रघिष निवेत ।

मोह मदन मुनिवेष जनु, रति अगुराज-समेत ॥

पणकुटीको माधारण लोग परमकुटी भो कहने हैं ।

तुलसीदासजीकी कुटी

गोस्वामी तुलसीदासजीके चित्रकूटवासके दो स्थान हैं,
 एक रामघाटके सामने गलीमें, दूसरा कामताकी परिक्रमामें
 चरणपादुकाके पास । रामघाटहीके निवासमें गोस्वामीजीको
 सारूप्य दर्शन हुए, जिसका प्रचलित दोहेमें वर्णन किया जाता है।

चित्रकूटके घाटपर भइ सन्तनकी भीर ।

तुलसीदाम चन्दन घमें तिलक देत रघुबीर ॥

परन्तु यह दोहा टीक नहीं। वैजनाथकृत गोस्वामीजी जीवन-चरितमें इस दर्शनका पूरा वर्णन है। गोस्वामीजी दर्शन लिये अत्यन्त उत्कण्ठित थे। इसी उत्कण्ठित अवस्थाका विह्वल हमने अपने छपाये हुए राजापुरके अयोध्याकाण्डमें दिया था।

जब गोस्वामीजी अत्यन्त विह्वल हो गये तब प्रेमका युगल सरकार राजाधिराजका रूप धारण करके विमानपर यह प्रकट हुए। उनके पीछे देवताओंके अनेक विमान आये थे।

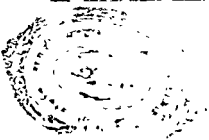
रामघाट मन्दाकिनी भई विमानन भीर।

तुलसिदास चन्दन घसै तिलक देत रघुबीर ॥

रामघाटके ऊपरकी कुटीमें श्रीराम, लक्ष्मण और जानकी की मूर्तियाँ हैं और दो-तीन साधु रहते हैं। परिक्रमाकी कुटीमें गोस्वामीजीकी मिट्टीकी मूर्ति है।

जानकी-कुण्ड

पर्णकुटीसे कुछ दूर मन्दाकिनीके किनारे-किनारे चलकर जानकी-कुण्ड मिलता है। प्राकृतिक शोभाके विचारसे यह स्थान अत्यन्त रमणीय है। नदीके दोनों तटोंपर सुहावना वन है और बीच-बीचमें रूफेद पत्थर निकले हैं जिनपर युगल सरकार





घरण-चिह्न हैं। इनमें कोई घात बनायटकी नहीं है और जिन पत्थरोंपर चिह्न बने हैं वे आग्नेय हैं। रामभक्त यह मानते हैं कि जब युगल सरकार इनपर चलते थे तब पत्थर मोमकी भाँति नरम हो जाते थे।

फटिक-शिला

इसके दो चित्र हैं। जब युगल सरकार चित्रकूटसे अत्रि-मुनिके आश्रमको जाते थे, तो रास्तेमें नदी-तटपर एक भारी मफेद शिलापर बैठे थे और यहाँ—

“ बुनि कुमुम सुहाये । निज कर भूषण राम बनाये ॥

सीतहि पहिराये प्रभु मादर ।

यहाँ जयन्तने कीचेका रूप धरकर धीर्माताजीके चोच मारी थी जिसका वर्णन रामायण अरण्यकाण्डमें है।

इसके दो चित्र हैं, एक फटिक-शिलाका है। अब दो शिलाएँ हैं जो कदाचित् पहले मिली हुई थीं। यह दोनों मन्दाकिनीके बीचमें स्थित हैं। चित्रमें जो भगली शिला है उसपर घरणके चिह्न है। दूसरे चित्रमें जो दृश्य दिखाया गया है यह शिलाके सामने पड़ता है और शिलापरसे लिया गया है। यह बहुत मनोहर दृश्य है।

कामता

यों तो परिक्रमामें जितने तीर्थ आ जाते हैं सब चित्रकूटके अन्तर्गत हैं परन्तु मुख्य तीर्थ यही पहाड़ी है। इसे चित्रकूट न कहकर कामता क्यों कहते हैं। इसका कारण हमारी समझमें नहीं आता। गोस्वामी तुलसीदासजीने लिखा है—

कामद भेगिरि रामप्रसादा।

यही कारण था तो कामदगिरि कहनेमें क्या आपत्ति थी? यह टेकरा युगल सरकारका सिंहासन माना जाता है और उनके निवास-स्थान होनेके कारण संसारभरके तीर्थ इसीके चारों ओर आकर बस गये। यों तो रामायणमें लिखा है कि श्रीरघुनाथजी कुछ दिन यहाँ रहकर दक्षिण चले गये थे, परन्तु भक्तोंका विश्वास यह है कि अब भी यहाँ विराजमान हैं।

चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सिय-लखन-समेत।

यह पहाड़ी विन्ध्याचलकी शाखामें शिखर-श्रेणीकी अन्तिम चोटी है और सुडौल होनेके कारण महाकवि कालिदासने मेघदूत-काव्यमें इसे भूकुच-समान बखाना है। यह सदा हरी-भरी रहती है और इसके तटपर चारों ओर मन्दिरोंकी पंक्ति है। बालमोक्ति

ॐ सरकारके रहने योग्य इसे बतया, तो कहा था—

मुहावन कामत चारु। करि केहरि मृग विहँग विहारु॥

पुनीत पुरान बखानी। अजिप्रिया निज तप-बल आनी॥

ॐ चारनाद मन्दकिनि। जो सब पातक-पोतक-डाकिनि॥

ॐ दि० वहु बसहीं। करहि जोग-जप-तप तनु कभी॥

कामता

यों तो परिक्रमामें जितने तीर्थ आ जाते हैं सब अन्तर्गत हैं परन्तु मुख्य तीर्थ यही पहाड़ी है। इसे कहकर कामता क्यों कहते हैं। इसका कारण हमारी नहीं आता। गोस्वामी तुलसीदासजीने लिखा है—

कामद भेगिरि रामप्रसादा।

यही कारण था तो कामदगिरि कहनेमें क्या आपत्ति थी यह टेकरा युगल सरकारका सिंहासन माना जाता है उनके निवास-स्थान होनेके कारण संसारभरके तीर्थ इस चारों ओर आकर बस गये। यों तो रामायणमें लिखा है धीरघुनाथजी कुछ दिन यहाँ रहकर दक्षिण चले गये थे, पर मन्त्रोंका विश्वास यह है कि अब भी यहीं विराजमान हैं।

चित्रकूट सद्य दिन बसत प्रभु सिय-लगन-समेत।

यह पहाड़ी विन्ध्याचलकी शाखामें शिखर-श्रेणीकी अन्तिम चोटी है और मुड़ील होनेके कारण महाकवि कालिदासने मेघदूत-काव्यमें इसे भूकुच-समान बयाना है। यह सदा हरी-भरी रहती है और इसके तटपर चारों ओर मन्दिरोंकी पंक्ति है। घाटमोक्तिने जब युगल सरकारके रहने योग्य इसे बताया, तो कहा था—

मैल मुहापन कामन चारु। करि केहरि मृग विहंग विहारु ॥

नदी पुर्वीय पुरान बगानी। अथिप्रिय। निग नय-बल शानी ॥

मुरसरि घार नाई मन्दकिनि। ओ मय पानक-गोनक-बाहिनि ॥

—दिग्गजिनर बहु बगरी। करहि जोग-जय-गय ननु बगरी ॥

चित्रकूटकी माँकी

आजकल माँ पहाड़ी घेमाँ हैं जेमाँ महर्षि चाल्माँरिने पो। भेद इनना हो हो गया है कि अय यहाँ करि (जगली और केहरि (निह) नहीं रहने। इसकी परिप्रामा तीन मील है। ई० सन १७२५ में राजा छत्रसालकी गनी चौदकुंअर परिप्रामा पजी बनवा थी थी और ई० १८१७ में अ सरकारने इसकी मरम्मत करा दी। इसमें यात्रियोंको प्रद करनेमें बड़ा सुभाता होता है। यह पहाड़ी भगवान्का है इसमें इसपर कोई हिन्दू नहीं चढ़ता और न इस वृक्ष काटे जाते हैं। इसीसे यह सदा हरी-भरी रहते चित्रकूट-माहात्म्यमें लिखा है कि इसके भीतर एक बहुत महल और सुन्दर बाग है जिसमें युगल सरकार निवास यह पहाड़ी आधी अंगरेजी राजमें और आधी पजण्डी

मुखारविन्द

सांतापूरसे कामताकी ओर आने ही पहले मुखारि दर्शन होते हैं। यह स्थान श्रीरघुनाथजीकी मूर्तिके पूजनाय माना जाता है। इसमेंसे पहले दूधकी धारा नि थी। सम्भव है कि पहाड़ीमें गुफा थी जिसमें युगल सरकार थे उसीका यह मुख हो। गुफाके द्वारकी ससृत्तमें मुख कहते

चरण-चिह्न

चरण-चिह्न कई स्थानपर हैं परन्तु मुख्य तीन हैं (१) फटिक-शिला, (२) जानकी-कुण्ड और (३) चरण-पा

ॐ दरीमुखोत्थेन समीरयेन ।

फटिक-शिखरके चिह्न सफेद आग्नेय पत्थरके बने हैं और लानों
 बरसके होंगे जिसका चिन्तार भूचिन्तानमें हो सकता है। ऐसे ही
 जानकी-कुण्डके भी हैं। चरण-पादुका कामनाको परिग्रहामें है।
 यहाँ तीन गुमटियाँ हैं, एकके नीचे एक छोटा-सा घाँघरौ पाँवका
 चिह्न है। यह श्रीजानकीजीके चरणका चिह्न बताया जाता है।
 दोफे नीचे बहुत बड़े-बड़े पाँवोंके चिह्न हैं, ये चिह्न उस समयके
 बने कहे जाते हैं जब भरतजी यहाँ आए थे और चारों भाई गले
 मिले थे। इनमें कोई बात बनावटी नहीं है। चिह्न दूरसे ऐसे जान
 पड़ते हैं मानो कोई अभी गोली मिट्टीपर चला गया है। इन्हीं चिह्नों-
 का उल्लेख महाकवि कालिदासने अपने मेघदूत-काव्यमें किया है—
 पर्वतः पुंसां रघुपतिपदरङ्गितं मेखलाम्।

‘चित्रकूटकी मेखला लोकके घन्य श्रीरघुनाथजीके चरणों-
 के चिह्नोंसे अंकित है।’

बयालीस बरसमें ऊपर हुए जब हमने पहले-पहल इनके
 दर्शन किये थे। हमने वहाँके साधुओंसे पूछा कि ये चिह्न आज-
 कल चौरस धरतीपर हैं पर्वतकी मेखलामें नहीं। हमको उत्तर
 कि इनके आस-पासकी नीची धरती मिट्टीसे पाट दी गयी
 मिट्टी लगा करके यहाँतक लोग पहुँचते थे। मेघदूतसे
 डेढ़-दो हजार बरस पहले भी ये चिह्न वर्तमान थे
 कि चरण-चिह्न माने जाते थे।

राम-शय्या

स स्थानकी बनावट किसीको समझमें नहीं आती। इसमें
 कोई बात नहीं है। एक बड़ी शिलापर दो चिह्न ऐसे



विष्णुजी की

मेहुण है जेमे कोमल रुईके गुदूपर दो प्राणियोंके मोनेमे रहें हैं। कहा जाता है कि एक चिह्न धीरघुनाथजीके ले-
ना था और दूसरा धीरमोनाथजीके। दोनोंके बीचमे
चिह्न है। पानप्रयागधर्ममें रहनेमें युगल मरकार धनुष र-
खकर मोने थे।

पन्थरपर चिह्न बन जाना एक अनोखी घात है, प-
चाण-चिह्न भी घेमे ही है। भू-विज्ञानके अनुसार ऐसे
ऊँके भाँतर बनते हैं। पोंटे पृथ्वीके उठनेसे पछाड़ बन
हैं। इसमें लागों घरम लग जाते हैं। भक्तोंका विश्वास यह
धीरघुनाथजीके रपशमे पन्थर मोमकी भाँति कोमल होगये
पोंटेसे पत्थर-के-पत्थर रह गये। इनकी कथा यह है कि
सरकार एक बार घनमे विचरते थे कि रात हो गयी और यही
रहे थे। इसके चारों ओरकी पक्की दीवार हमारे शिष्य
सिद्धगोपालजी (सियारामदास) ने घनवायी थी जो घर-
छोड़कर साधु बनकर यही रहते थे।

भरत-कूप

यह एक बहुत बड़ा कुआँ इसी नामके रेलवेस्टेशनसे
मौल दक्षिण और कामतासे ६ मौल पश्चिमोत्तर है। रामा
पढ़नेवाले जानते ही हैं कि भरतजी धीरघुनाथजीके राज्याभि-



देकरे आने कुल
शिवगणेशकी मूर्तिके

1

शिव देव है।

शिव

विमल कमल मग बानी ॥
पवन वीर्य बल वीर्य ॥
आम अति परम विचार ॥
सुखदिव कय विसेवा ॥
काल विदित बहि कहे ॥
रत मय अति अम भावा ॥
र मय बहू कय आन ॥
भावत मय दिने बलाई ॥
पवन अमि अम ॥
, शिव महीय सुक ॥

—
आये थे। अब शिवगणेशकी
- १ भाग

